विद्यापति हिन्दी के आदिकालीन कवि हैं तथा उनकी कविता का मुख्य विषय शृंगार है। मैथिल कोकिल विद्यापति का कोई प्रामाणिक जीवनवृत्त प्राप्त नहीं होता किन्तु उन्होंने अपनी रचनाओं में जिन आश्रयदाताओं के नाम का उल्लेख किया है, उनसे उनके जीवनकाल के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। विद्यापति के पिता का नाम **गणपति ठाकुर** एवं माता का नाम **हासिनी देवी** था। कहते हैं कि इनके माता-पिता ने इन्हें भगवान शंकर की आराधना से प्राप्त किया था। इनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था तथा मिथिला के प्रकाण्ड विद्वान् **हरिमिश्र** से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। विद्यापति की पत्नी का नाम **चम्पति देवी** (चन्दल देवी) था जिनसे इन्हें तीन पुत्र प्राप्त हुए जिनके नाम थे—**वाचस्पति ठाकुर, हरपति ठाकुर** और **नरपति ठाकुर**। इनकी एक पुत्री भी थी जिसका नाम था—दुल्लहि।

जन्म स्थान—विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर भी राजमंत्री और कवि थे। उन्होंने 'गंगामणि तरंगिणी' नामक पुस्तक की रचना की थी। विद्यापति का जन्म-स्थान 'मिथिला' क्षेत्र का '**विसपी**' ग्राम है जो नार्थ ईस्ट रेलवे के 'कमतौल' स्टेशन के निकट है। कहा जाता है कि मिथिला के राजा शिवसिंह ने 'विद्यापति' को यह गाँव दान में दिया था।

जीवनकाल—विद्यापति के जीवनकाल (जन्म-मृत्यु) के सम्बन्ध में क्योंकि निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं होते अतः अनुमान से काम लेना पड़ता है। उस समय मिथिला में लक्ष्मणाब्द (लक्ष्मण-संवत्) प्रचलित था तथा इसके साथ-साथ शक संवत् भी दिया जाता था। शिवसिंह के सिंहासनारोहण की तिथि से सम्बन्धित पद की पहली पंक्ति इस प्रकार है—

अनल रंध्र कर लक्खन नरवये सक समुद्द कर अगिनि ससी।

यहाँ अनल = 3, रंध्र = 9, कर = 2 अर्थात् 293 लक्ष्मण संवत् और समुद्द = 4, कर = 2, अगिनि = 3, ससी = 1 अर्थात् 1324 शक संवत् में शिवसिंह का राज्याभिषेक बताया गया है। इस प्रकार शक संवत् और लक्ष्मण संवत् में 1031 वर्ष (1324 − 293 = 1031) का अन्तर है। शिवसिंह ने जो दानपत्र विद्यापति को प्रदान किया उस पर लक्ष्मणाब्द 293 और शकाब्द 1329 दिया है। इस दृष्टि से इन दोनों में 1115 वर्ष का अन्तर है। विद्यापति ने अपने पहले आश्रयदाता कीर्तिसिंह की प्रशंसा में कीर्तिलता की रचना की। कीर्तिसिंह लक्ष्मणाब्द 252 (1361 ई.) में मिथिला के राजा बने अतः विद्यापति 1361 ई. से पूर्व जन्मे थे, यह तो निर्विवाद है। कीर्तिसिंह के बाद भवसिंह, उनके बाद देवीसिंह और फिर शिवसिंह 1403 ई. में मिथिला के राजा बने। शिवसिंह विद्यापति के मित्र थे। शिवसिंह के राजा बनने पर ही 'विसपी' ग्राम विद्यापति को दिया गया था। राजा शिवसिंह की मृत्यु 296 लक्ष्मणाब्द (1406 ई.) में हो गई थी।

विद्यापति राजा गणेश्वर के दरबार में अपने पिता के साथ जाया करते थे जो दरबार में मंत्री थे। उस समय विद्यापति की आयु 10-11 वर्ष ही रही होगी। गणेश्वर की मृत्यु 1361 ई. में हुई थी अतः अनुमानतः विद्यापति का जन्म 1351 ई. में माना जा सकता है।

1403 ई. में शिवसिंह जब मिथिला के राजा बने तब उनकी अवस्था 50 वर्ष थी और विद्यापति उनसे दो वर्ष बड़े थे अतः इस आधार पर भी विद्यापति का जन्म 1351 ई. में मानना उचित है। शिवसिंह का राजत्व काल 1403-1406 ई. ही माना जाता है। राजा शिवसिंह की मृत्यु के 32 वर्ष पश्चात् एक दिन विद्यापति ने उन्हें स्वप्न में देखा जिसका उल्लेख इस पद में है—

Scanned with CamScanner

बतिस बरस पर सामर रूप।

बहुत देखल गुरुजन प्राचीन

अब भेलहु हम आयु विहीन।

अर्थात् "मैंने राजा शिवसिंह को मृत्यु के 32 वर्ष बाद स्वप्न में भयानक रूप में देखा है। गुरुजनों के ... यह मृत्यु का सूचक है।" इस आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यापति की मृत्यु इसी वर्ष या इसके आसपास 1439 ई. में हो गई।

उक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यापति का जीवनकाल 1351 ई. से 1439 ई. है। एक मोटे अनुमान से उनका जीवनकाल 1350 ई. से 1440 ई. माना जा सकता है।

आश्रयदाता—विद्यापति मिथिला के कई राजाओं के आश्रय में रहे। उनके पिता गणपति ठाकुर मिथिला नरेश गणेश्वर के राजमंत्री होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। गणेश्वर की मृत्यु असलान नामक यवन ने छलपूर्वक 1361 ई. (लक्ष्मणाब्द 252) में कर दी थी। राज्य में सर्वत्र अशान्ति फैल गयी और विद्यापति को निराश्रित रहना पड़ा। सन् 1402–1403 ई. में गणेश्वर के पुत्र कीर्तिसिंह ने जौनपुर के शासक इब्राहीम शाह की सहायता से मिथिला की राजगद्दी प्राप्त कर ली और विद्यापति ने कीर्तिसिंह के आश्रय में रहकर 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका' की रचना की। ये दोनों कृतियाँ अवहट्ट (अपभ्रंश) भाषा में लिखी गई हैं।

कीर्तिसिंह के पश्चात् भवसिंह और फिर देवीसिंह मिथिला की गद्दी पर बैठे। विद्यापति इनके आश्रय में रहे। राजा देवीसिंह के शासन काल में उन्होंने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रन्थ की रचना की। राजा देवीसिंह के आश्रय में उन्होंने 'भू-परिक्रमा' नामक कृति भी लिखी। इसमें मिथिला से नैमिषारण्य तक के समस्त तीर्थों का वर्णन है।

राजा देवीसिंह के उपरान्त शिवसिंह मिथिला की गद्दी पर बैठे जो विद्यापति के मित्र थे। इसीलिए विद्यापति ने स्वयं को चारण कवि न मानकर 'राजसखा' कहा है। सुमति नामक कलावंत के पुत्र जयंत को विद्यापति के पदों को मिथिला में प्रचलित राग-रागिनियों में गाने के लिए नियुक्त किया गया था। कालान्तर में दिल्ली के सुल्तान ने मिथिला पर आक्रमण कर दिया जिसमें राजा शिवसिंह की मृत्यु हो गई और उनकी पत्नी लखिमादेवी भी बाद में महाप्रयाण कर गई तत्पश्चात् विद्यापति ने राजबनौली के शासक पुरादित्य के आश्रय में 'लिखनावली' की रचना की, जिसमें उनकी दयनीय स्थिति का निरूपण है। राजबनौली से ये पदमागाँव में आए जहाँ शिवसिंह के छोटे भाई पद्मसिंह की मृत्यु के उपरान्त उनकी पत्नी विश्वास देवी राज्यभार सम्भाल रही थीं। उनके आश्रय में रहकर विद्यापति ने **'शैवसर्वस्वसार'** तथा **'गंगा वाक्यावली'** नामक दो ग्रन्थों की रचना की।

विश्वास देवी के उपरान्त मिथिला की गद्दी पर हरिसिंह और तत्पश्चात् उनके पुत्र नरसिंह बैठे। नरसिंह के आश्रय में विद्यापति ने **'विभागसार'** नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें उत्तराधिकार एवं दायभाग की व्यवस्था है। नरसिंह की पत्नी धीरमति के आग्रह पर कवि विद्यापति ने **'दान वाक्यावली'** लिखी और तत्पश्चात् इनके पुत्र भैरवसिंह के शासनकाल में **'दुर्गाभक्ति तरंगिणी'** की रचना की।

उपाधियाँ—विद्यापति को समय-समय पर अनेक उपाधियों से सम्मानित किया गया। इन्हें सुकवि, दशावधान, कंठहार, राजपंडित, खेलनकवि, सरस कवि, कविरत्न, नवजयदेव आदि अनेक उपाधियाँ प्रदान की गईं। इन्हें मैथिल कोकिल एवं अभिनव जयदेव की उपाधि से काव्य रसिक जानते हैं।

कहा जाता है कि विद्यापति ने अपने नश्वर शरीर को अन्तिम क्षणों में गंगा तट पर विसर्जित कर दिया। इसके साक्ष्य रूप निम्न पद प्रचलित हैं—

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छाड़इत निकट नयन बह नीरे॥
कर जोरि विनयओ विमल तरंगे।
पुन दरसन होहु पुनमत गंगे॥
मनइ विद्यापति समदओ तोही।
अंतकाल जनि बिसरहु मोही॥

Scanned with CamScanner

मैथिली भाषा के कवि—विद्यापति के सम्बन्ध में वर्षों तक यह विवाद भी रहा है कि वे मैथिली भाषा के कवि हैं या बंगला भाषा के। वस्तुत: विद्यापति की कविता संस्कृत के कवि जयदेव के गीत गोविंद से बहुत प्रभावित रही है जो बंगाल में 12वीं शताब्दी में संस्कृत कवि के रूप में हुए थे।

चैतन्य महाप्रभु विद्यापति के राधा-कृष्ण विषयक पदों को गाकर भावविभोर होकर मूर्छित हो जाते थे। उनकी शिष्य मण्डली ने इन पदों का बंगाल में व्यापक प्रचार कर दिया था, इसलिए भी लोग विद्यापति को बंगला का कवि मानने लगे। विद्यापति की शैली का अनुकरण करके कई बंगला कवियों ने रचनाएँ लिखीं।

बंगाली वैष्णव भक्त ब्रजभूमि में आकर विद्यापति के मधुर गीतों को गाया करते थे जिसके अनुकरण पर ब्रजभाषा में गीति शैली का जन्म हुआ।

वस्तुत: विद्यापति मैथिल थे। उनकी भाषा मैथिली थी जो हिन्दी की बिहारी उपभाषा वर्ग की एक बोली है। अत: विद्यापति मैथिल भाषा के कवि हैं, बंगला भाषा के नहीं।

विद्यापति ने अपनी रचनाएँ संस्कृत, अपभ्रंश (अवहट्ट) तथा 'मैथिली' तीनों भाषाओं में लिखीं।

सम्प्रदाय—विद्यापति के पिता शिवभक्त थे अत: विद्यापति को भी 'शैव' सम्प्रदाय में दीक्षित कवि माना जाता है। भले ही राधा-कृष्ण को उन्होंने अपनी श्रृंगारी कविता का आधार बनाया तथापि वे शिवभक्त ही थे। महेशबानी और नचारी के अन्तर्गत उन्होंने जहाँ शिव की आराधना की है वहीं शैवसर्वस्वसार में शिव पूजा का विस्तार से वर्णन है। यद्यपि कुछ विद्वानों ने उन्हें वैष्णव, कुछ ने शाक्त तो कुछ ने स्मार्त सम्प्रदाय का अनुयायी बताया है तथापि नरेन्द्रनाथ गुप्त उन्हें 'शैव' ही बताते हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी विद्यापति को शैव ठहराया है। विद्यापति के सभी आश्रयदाता राजा भी शैव थे। पं. शिवनंदन ठाकुर के मत से भी विद्यापति शैव मतावलम्बी थे। विद्यापति की चिता के स्थान पर आज भी शिव मन्दिर बना है।

कृतित्व—विद्यापति को संस्कृत, अवहट्ट एवं लोकभाषा मैथिली पर पूरा अधिकार था अत: उन्होंने इन तीनों भाषाओं में अपनी रचनाएँ लिखी हैं।

(i) **संस्कृत रचनाएँ**—संस्कृत में उन्होंने 12 पुस्तकें लिखी हैं—1. भू-परिक्रमा, 2. पुरुष परीक्षा, 3. लिखनावली, 4. विभागसार, 5. शैवसर्वस्वसार, 6. गंगा वाक्यावली, 7. दुर्गाभक्ति तरंगिणी, 8. दान वाक्यावली, 9. गयापत्तलक, 10. वर्षकृत्य, 11. पांडव विजय, 12. मणिमंजरी।

(ii) **अवहट्ट रचनाएँ**—1. कीर्तिलता, 2. कीर्तिपताका (इसमें संस्कृत का भी कुछ अंश है)।

(iii) **मैथिली भाषा**—(1) **पदावली**—संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी केशव की भाँति विद्यापति ने लोकभाषा को आदर दिया। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्धि मैथिली में रचित पदावली के कारण ही है। वे लिखते हैं—

देसिल बअना सब जन मिट्ठा।
ते तैसन जपओ अवहट्ठा॥

विद्यापति की प्रतिभा निश्चय ही बहुमुखी थी। 'पुरुष परीक्षा' से उनके नीतिशास्त्र ज्ञाता होने का पता चलता है। 'भू-परिक्रमा' से उनके भौगोलिक ज्ञान की जानकारी मिलती है, 'लिखनावली' एवं 'विभागसार' से यह प्रमाणित होता है कि उन्होंने स्मृतियों का अध्ययन किया था इसी प्रकार अन्य संस्कृत ग्रन्थों से उनके धर्मज्ञान का पता चलता है। 'पदावली' उनकी कवित्व शक्ति का चरम उत्कर्ष है तथा राधा-कृष्ण के श्रृंगार का वर्णन कोमलकांत मधुर पदावली में होने से जनसामान्य में लोकप्रिय है।

Scanned with CamScanner